प्राचीन वंशावली ५१/४७

प्राचीन वंशावली ५१/४७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

5724.
5724.

वंशवृक्ष १ — अध्याय २ पृ० ९ का नकशा

इक्ष्वाकु और बुधसे आरंभकर श्रीराम और श्रीकृ[ष्ण]... [भ]द्र तक सूर्य और चन्द्रवंशकी वंशावली

श्रीनारा[यण]
ब्रह्माजी

मरीचि
कश्यप
विवस्वान (सूर्य)
वैवस्वतमनु

अत्रि
समुद्र
चन्द्र वा सोम
बृहस्पति
बुध

१ इक्ष्वाकु जिसके १०० पुत्र हुए (अ)

२ नृग (इ) इससे चौथी पीढीमें कानीनने अग्निहोत्र लिया और उसके वंश वाले धर्मगुरु हुए.

३ नाभाग इसकी पुत्रीके तीन पुत्र हुए जिनमेंसे तीसरे आनर्तने कुशस्थली द्वारका आनर्तदेशमें बसाई

४ धृष्ट इसके वंशवाले ब्रह्मत्वको प्राप्त हुए.

५ करूष इसके वंशवालोंने कारूषके उत्तर सूर्य वंशकी शाखा को स्थापन किया.

६ नरिष्यन्त (उ) ७ प्रषध्र — इन दोनोंका वृंशवृत्त नहीं मिलता.

८ नभग यह व्योपारमें लगा रहा इसके एक पुत्र ने अपना वंश चलाया.

९ हवि (कवि) यह तपस्वी बनवनवासी होगया.

१० इला (कन्या) यह पृथिवी मानीगई और बुधको व्याहीगई

पुरूरवा
आयु वा यात्री आदि छ पुत्र हुए जिसको तातार और चीनके वंश लिखनेवालोंने अपना मूल पुरुष मानाहै.
नोहास वा नहुष
ययाति

इक्ष्वाकु वंश और निमि वंश

	इक्ष्वाकु	निमि
२	विकुक्षि* (शशाद)	निमि
३	पुरंजय वा ककुत्स्थ (क)	मिथिल मिथिलापुर बसाया.
४	अनपृथु	जनक
५	विश्वगंधि	उदावसु
६	आर्द्र (चन्द्रभाग)	नन्दिवर्धन
७	यवन (युवनाश्व)	सुकेतु
८	श्रावस्त	देवरात
९	बृहदश्व	बृहद्रथ
१०	धुंधुमार (कुवलयाश्व)	महावीर्य
११	दृढाश्व	सुधृति
१२	हर्यश्व (हरियाश्व)	धृष्टकेतु
१३	निकुंभ	हर्यश्व
१४	बर्हणश्व (बहुलाश्व) (ख)	मरुत (मरु)
१५	सेनजित्	प्रतीप (प्रतीन्धक)
१६	युवनाश्व	कीर्तिरथ
१७	मान्धाता	देवमित्र (देवमीढ)
१८	पुरुकुत्स (ग)	विस्तृत (विबुध)
१९	अरुण (अनरण्य)	महाधृति (महीध्रक)
[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	[illegible]	[illegible]
२२	सत्यव्रत	स्वर्णरोमा
२३	त्रिशंकु	ह्रस्वरोमा
२४	हरिश्चन्द्र	सीरध्वज
२५	रोहित (रोहितासको बसानेवाला)	कुशध्वज
		धर्मध्वज
२६	हरित	कृतध्वज
२७	चम्प (चम्पापुरबसानेवाला (घ)	केशीध्वज
		बाहुमान (भानुमान)
२८	विजय	अरिष्टनेमि (कृष्णनेमि)
२९	भरुक	श्रुतायु
३०	वृक	सुपार्श्व
३१	बाहुक (रामायणमेंइसे असितलिखाहै)	ईसरथ (चित्ररथ)
		क्षेमधी
३२	सगर[2]	समरथ
३३	केशी (ङ	ऊर्ध्वकेतु
३४	असमंजस	सोमरथ
३५	अंशुमान	सत्यरथ
३६	दिलीप	उपगुरु
३७	भगीरथ	उपगुप्त
३८	श्रुतसेन	एनगुप्त (वसनंत)
३९	नाभाग (नाभ)	युयुधान
४०	अम्बरीष[3] (च)	सुभाषण
४१	सिन्धुद्वीप	श्रुतसेन (श्रुत)
४२	अयुतायु	नयसेन (जय)
४३	ऋतुपर्ण	विजय
४४	नल [illegible]	आर्द्र (ऋत)

यदु जिसके छ पुत्र हुए

क्रोष्टा (चौथा)	शतजित पांचवां — हैहय	वेणुहय
वृजिनवान		
स्वाहित	हैहय	वेणुहय
उर्भंग (विषदु)	×	
चित्ररथ	×	
शशबिन्दु वा शशिबिन्दु[5]	×	
पृथुश्रवा	×	
धर्म (सुयज्ञ)	×	
उशना	×	
तितिक्षु	×	
मरुत	×	
कंबल (कम्बलबर्हिष)	×	
बर्हिष	धर्म	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	संधेता (संहन)	
पृथुरुक्म	भद्रसेन	
हविश्मान (हवि)	दुर्दम	
ज्यामघ (द)	धनक	
सुवापि (शैब्या)	कृतवीर्य	
विदर्भ	सहस्रार्जुन[6] (इसके १०० पुत्र हुए.)	
कौशिक (कुश)	शूरसेन	
लोमपाद	शूर	
धृति (ध)	धृष्ट	
जीमूत	कृष्ण	
ऋषभ	जयध्वज	
भीमरथ	कुरुस	
नवरथ	वंग	
दृढरथ (दशरथ)	तालजंघ[7] (इनके पांच वंश चले)	
शकुन्ति	वीतिहोत्र	
करंभक	द्रष्टा	
कुरु	यवन (अनन्त)	
देवरात	दुर्जय	
देवक्षेत्र		
मधु (न)		
द्रवरस		
पुरुहूत (पुरुहोत्र		
गुणी (प)		
यादुप (यादव)		
जन्तु		
सात्वत (इनके सात पुत्र)		

पुरु

पुरु
जन्मेजय
प्रचीनवान
प्रविधान
प्रवीर
मनस्यु
चारुपद
सुधन्वा (सुद्युम्न)
बहुगव
संयाति
अहंयाति
रौद्राश्व (अ)
घृताची
रं[तिना]र (रंतिभार)
तंसु
[illegible]
रैभ्य
×
×
×
दुष्मन्त (दुष्यन्त) (ट)
भरत (जिसने शकुंतलाको व्याह किया)
वितथ वा, भरद्वाज
मन्यु
बृहत्क्षेत्र
सुहोत्र
हस्ती

हस्तीके पुत्र: अजमीढ, देवमीढ (द्विमीढ), पुरुमीढ

उर वा उरस (तुर्वसु)

	वह्नि		१ ईसासे २२०० वर्ष पहले
	सुवह्नि (गोभानु)		
	त्रिशानि		१
	करंधम		२
	मरुत्त		३
	यशमय (दुष्मन्त)		४
	वरूथ (इसके आठपुत्र)		५
			६
द्रुज (द्रुह्य)		बभ्रु	७
सेतु (ण)		उरदेश (अर)	८
अर[ब्ध] (आरब्ध)		गांधार १५	९
गांधार		गंध (गांडीर)	१० २०००
धर्मसेन (त)		धर्म	११
[illegible]		धर्मव्रत	१२
[illegible]		[illegible]	
का[illegible]		[illegible]नर	
गोभानु वा वर्ग		कालानल	१५ १९००
त्रिभानु		सृंजय	१६
करंधम		पुरंजय	१७
मेरु		जन्मेजय	१८
म[illegible]		महा[illegible]	१९
दु[ष्य]न्त		महामना	२० १८००
शकुंतला	कृसुन (कुरस्थान)	उशीनर	२१
		नृग (इसके नौ पुत्र)	२२
		कृमि	२३
कलिंजर (कोल)	केरल. पांड्य. चोल १७	दर्शना	२४
		शिबि (इसके ४ पुत्र)	२५ १७००
		पृथुदर्भ	२६
		अंग १८	२७
		अनव १९	२८
		दिविरथ	२९
		धर्मरथ	३० १६००
		चित्ररथ	३१
		सत्यरथ	३२
		लोमपाद	३३
		पृथुलाक्ष	३४
		बय (चंप)	३५ १५००
		दद्र	३६
		हर्यक	३७
		बृहत्कर्मा	३८
		बृहद्भानु	३९

अजमीढ

शान्ति (नीलिसे)	जन्हु (केशिनीसे)	ऋक्ष		बृहदिषु	यवीनर (पुरुमीढ)
सुशान्ति	अजकाश्व	सम्वरण		बृहद्धनु	कृतमान
पुरुजाति	कुश	कुरु		बृहत्काय	सत्यधृति
अर्क	बलाकाश्व			जय (जयद्रथ)	दृढनेमि
वाजस्व (बाह्याश्व)	कुशिक कुशांब	सुधनु	परीक्षित	विषद	सुदमा
१ इनके ५ पुत्र	गाधि	सुहोत्र	जन्हु (गोदलिया)	सेनजित्	सार्वभौम
मुद्गल	विश्वामित्र	च्यवन	सुरथ	रुचिराश्व	मिहित
मौकुल्य	देवरात (इनके दो पुत्र)	कृतिमनु (कृती)	विदूरथ	पार	रुक्मन्त
दिवोदास	शुनःशेप / अष्टक	विश्रिय	सार्वभौम	पृथुसेन	सुपार्श्व
मित्रयु (ढ)		उपरिचर	जयसेन	सकृति	सुमति
सोमक		बृहद्रथ	राधिक	बलराज (विभ्रम)	सन्तति
जन्तु		कुशाग्र	अयुतायु	अनूह	कृति
					उग्रायुध

बाजस्व के पुत्र: ५ कम्पिल्य, ४ यवीनर, ३ बृहदश्व, २ सृंजय, १ मुद्गल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३८ श्रुतसेन
३९ नाभाग (नाभ)
४० अम्बरीष[३] (च)
४१ सिन्धुद्वीप
४२ अयुतायु
४३ ऋतुपर्ण
४४ नल (छ)
४५ सिरुआह (सर्वकाम)
४६ सुदास (ज)
४७ अश्मक
४८ मूलक (वलिक)
४९ सत्यव्रत (दशरथ)
५० ऐडविड
५१ विश्वसह
५२ खट्वाङ्ग
५३ दीर्घबाहु
५४ दिलीप
५५ रघु
५६ अज
५७ दशरथ
५८ रामचन्द्र

एनगुप्त (वस्तनंत)
युयुधान
सुभाषण
श्रुतसेन (श्रुत)
नयसेन (जय)
विजय
आर्द्र (ऋत)
शुनक
वीतहव्य
धृति
बहुलाश्व
५१ कृतिराज (कृति)

द्रवरस
पुरुहूत (पुरुहोत्र
गुणी (प)
यादुप (यादव)
जन्तु
सात्वत (इनके सात पुत्र)

वृष्णि (फ)
अनमित्र
सिनी
सत्य...
युयुधान
जय
कुणि
युगन्धर

देवावृध
बभ्रु
वृष्णि
चित्ररथ
१२ पुत्र

बाल वा अन्धक
कुकुर
सुतवान (वृष्णि)
विलोमा
कपोतरोमा
अनु
अन्धक
दुन्दुभी
दरदोन (अहिद्योत)
पुनर्वसु
आहुक
देवक
उग्रसेन
कंस *

भजमान
विदूरथ
सूर (९)
शिनी
भोज
ह्रदिक
देवमीढ
शूर
वसुदेव
श्रीकृष्ण *

कम्पिल्य यवीनर बृहदश्व सृंजय
मुद्गल
मौ...
दिवोदास
मित्रयु (ढ)
सोमक
जन्...
प्रष...
सम...
द्रुप... *
द्रौपदीकन्या

विश्वामित्र
देवरात (इनके दो पुत्र)
शुनःशेप अष्टक

च्यवन
कृतिमनु (कृती)
विभ्रिय
उपरिचर
बृहद्रथ
कुशाग्र
वृषभ
सत्यहित
पुष्पवान
जह्नु
उर्ज
बृहद्रथ
जरासंध *

सुरथ
विदूरथ
सार्वभौम
जयसेन
राधिक
अयुतायु
क्रोधन
देवतिथि
ऋक्ष
भीमसेन
दिलीप
प्रतीथ
शान्तनु बाल्हीक
विचित्रवीर्य सोमदत्त
शल *
पांडु * धृतराष्ट्र *
अर्जुन * भीम * युधिष्ठिर * दुर्योधन *
अभिमन्यु *
परीक्षित

रुचिराश्व
पार
पृथुसेन
सकृति
बलराज (विभ्रज)
अनूह
विष्वक्सेन (ठ)
उदक्सेन
भल्लाद
[illegible]
भीलोंके वंशधर
भल्लाटके १०० पुत्र

रुक्मन्त
सुपार्श्व
सुमति
सन्नति
कृति
उग्रायुध
क्षेम
सुवीर
रिपुंजय
[illegible]

पृथुलाक्ष
वय (चंप)
दद्र
हर्यक
बृहत्कर्मा
बृहद्भानु
बृहित (बृहात्म)
जयद्रथ
बृहद्रथ
विश्वजित
कर्ण
वृषसेन
पृथुसेन * २०

३४	
३५	१५००
३६	
३७	
३८	
३९	
४०	१४००
४१	
४२	
४३	
४४	
४५	१३००
४६	
४७	
४८	
४९	
५०	१२००
५१	
५२	
५३	११००

* वाल्मीकिरामायणमें विकुक्षिसे पहले (कुक्षि) नामहै औरभी इन नामोंमें वाल्मीकिसे अन्तर पडता है (अनुवादक)

१ सबसे बडा शकुन इसने उत्तरमें राज्य स्थापन किया जिससे वह विभाग बसगया.
२ इसको बापके राज्यसे तालीजंघने निकालदिया.
३ यह अंगदेशके लोमपादका समकालीन था.
४ यह नाम बाइसवें बुद्ध नेमिनाथकी उपाधि है.
५ इसने एक पृथक् वंश नियत किया जिसमें चंदेरीका राजा शिशुपाल था उसके प्रतिनिधियोंने रणथंभोरपर अधिकार किया यह जो पृथिवीराजके समय शिशुपालवंश कहलातेथे.
६ यह परशुराम और हरिश्चन्द्रके समकालीन थे.
७ रामायणमें इस महायुद्धका वर्णन है, जो हैहय तालीजंघ और सूर्यवंशके मध्यमें हुआ, जिससे इनके मतसम्बन्धी विश्वास भिन्न २ प्रकारके हुए. इन सूर्य और चन्द्र वंशके युद्ध करनेवाले इक्ष्वाकु और ययातिके वंशधरोंसे यह बात [illegible] इनको भारतवर्षके हैं मौनिसिन और जुपीटयन जा[illegible]...

८ इन पांचों भाइयोंने एक संयुक्त राज्य पांचालदेश बसाया और वाजस्वके वंशधरोंने सिन्धुके सब देशोंपर अपना अधिकार किया. वाज[illegible] अश्व यह सब अश्वके पर्याय हैं. इनका निकास (शाहफारिस) हिसटाजपीज चि[illegible] होताहै मेकिलिया मेडगिलियासे एक ब्राह्मणोंका वंश प्रगट हुआ जिसमें द्रोणाचा[र्य] विख्यात धनुर्धर थे.
९ इन नामोंके मिलानेसे उस मुल्कका नाम बनता है जिसे शूरसेनी कहते हैं.
१० इसके वंशका वृत्तान्त नहीं लिखागया, इसके [illegible]में कहाजाताहै कि यह चीनवालोंका पहला राजा था.
११ इसका उच्चारण देवमीढ वा पुरुमीढ किया जा[ता है].
१२ जिन नामोंके आगे * ऐसा चिन्ह है वे समकालीन [हैं] और महाभारतके समय विद्यमान थे.
१३ इनके नामसे ब्राह्मणोंका विख्यात गोत्र वा वंश [चला].
१४ इस शाखासे कोई वंश नहीं चला.
१५ इसके नामसे [illegible]न स्थित हुआ.

१६ यह उत्तरीय म्लेंच्छदेशका राजा हुआ.
१७ इन चार पुत्रोंके नामपर देशके चार नाम नियत हुए.
१८ आसाम और आवाका राज्य.
१९ अंगदेश जो अंगराजाका देश था जिसका पुत्र अनावा था.
२० यह महाभारतके युद्धमेंसे बचे हुएमेंसे था—
यह कुल अंगवंश कहाताहै और चौतीसवें राजा अंगके नामसे विख्यात है.

अनुवादक कृत टिप्पण.

(अ) भागवतमें मनुके इक्ष्वाकु, नृग, शर्य्याति, दिष्ट, धृष्ट, करूष; नरिष्यन्त, प्रषध्र, नभग, और कवि यह लिखेहैं.
(इ) नृगका पुत्र सुमति उसका भूतज्योति उसका वसु उसका प्रतीक उसका ओघवान. यहपांच पीढी हुईं टाड साहबने चार लिखीहैं.
(उ) भागवतमें नरिष्यन्तका वंश लिखाहै. यथा- नरिष्यन्त, चित्रसेन, ऋक्ष, मीढवान, ; पूर्ण इंद्र, वीतिहोत्र, सत्यश्रवा, उरुश्रवा, देवदत्त, अग्निवेश्य हुआ. इसी प्रकार औरभी पुत्रोंके वंश भागवत अष्टमस्कंधमें लिखेहैं.
(क) पुरंजयका पुत्र अनेना उसका पुत्र पृथु है टाडसाहबने दो नाम एक लिखेहैं.
(ख) बाहुलाश्वका कृशाश्व, कृशाश्वका सेनजित हुआ.
(ग) पुरुकुत्सका त्रिसदस्यु इसका अनरण्य हुआ. अनरण्यके हर्यश्व इनके त्रिबन्धन पुत्र हुआ.
(घ) चम्पका पुत्र वसुदेव वसुदेवका विजय हुआ.
(ङ) सगरका पुत्र केशी नहीं असमंजस था.
(च) भागवतमें नभके सिन्धुद्वीप पुत्र लिखेहैं.

(छ) नल ऋतुपर्णका सखा था पुत्र नहीं ऋतुपर्णका पु[त्र] सर्वकाम है.
(ज) सुदासका सौदास उसका पुत्र अश्मक हुआ.
(झ) अत्रिका पुत्र चन्द्रमा भागवतमें लिखाहै.
(ञ) रौद्राश्वका बेटा रंतिभार है नकि घृताची घृताची [उ]सकी मा है.
(ट) यहा टाडसाहबने बहुत भूल की है शकुन्तलाका [वि]वाह दुष्यन्तसे हुआहै.
(ठ) भागवतमें यहांसे तीन राजा पारके दूसरे पुत्र नीप[के] वंशके लिखेहैं.
(ड) भागवतमें कृतिका नीप और नीपका उग्रायुध लिखा है.
(ढ) यहांभी गडबड है चाहिये यह कि मित्रायु, च्यवन, सुदास, सहदेव, सोमक, जन्तु, प्रषत छोटा इससे द्रुपद और द्रुपदके द्रौपदी जन्मी.
(ण) द्रुह्युका बभ्रु इसका सेतु पुत्र हुआहै.
(त) धर्मके धृति इसके दुर्मद इसके प्रचेता.
(थ) नेत्रका कुन्ति कुन्तिका सोहञ्जि इसका महिष्मान महिष्मानके भद्रसेन
(द) ज्यामघका पुत्र विदर्भ हुआ (शैब्या तो उसकी रानी थी.

(ध) रोमपाद, बभ्रु, कृति, उशिक, चेदि यह रोमपादका वंश है. क्रथ जो कुशका भ्राताथा उसके कुन्त, धृष्टि, निहत्ति, दशार्ह, व्योम, जीमूत, भीमरथ, नवरथ हुए.
(न) भागवतमें मधुका पुत्र कुरु लिखा है.
(प) पुरुहोत्रका आयु उसका सात्वत यह भागवतमें है.
(फ) वृष्णिके सुमित्र और युधाजित दो पुत्र हुए इनके शिनि इनके अनमित्र हुए.

यह वंशावली विशेष रूपसे अष्टमस्कन्ध भागवतमें लिखी हैं. जिसको देखना हो स्पष्ट रूपसे वहां देखनेसे भागवतसे यह वंशावली शुद्ध होजातीहै.

5724

(श्रीवेङ्कटेश्वरस्टीमप्रेस, खेतवाडी, मुंबई)

5724

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA